Volume 2; Issue 1
E-ISSN: 3048-6742
January to March 2025

Sanskriti-Samvahika
संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 1; Jan. to March, 2025; Page No. 21-25

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में वर्णित प्राकृतिक सौन्दर्य

आरती पटेल

शोधच्छात्रा

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज

प्रयागराज

सारांश

मनुष्य का प्रकृति के साथ बहुत ही मार्मिक व अपनत्व का सम्बन्ध रहा है परन्तु आज के आधुनिक युग में मनुष्य अपने भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये प्रकृति के सौन्दर्य को भूलते जा रहे हैं। अपने स्वार्थ की सिद्धि में इतने अन्धे हो चुके हैं कि प्रकृति का विनाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। जबकि देखा जाए तो हमारे सांसारिक जीवन- यापन के लिए जो भी बहुमूल्य वस्तुएं हैं वह हमें प्रकृति निःशुल्क रूप में प्रदान कर देती है। प्रकृति के सौन्दर्य में ही हमें परमात्मा के साक्षात् दर्शन होते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य ही हमें परमानन्द की प्राप्ति कराता है। हम प्रकृति में ही उत्पन्न होते हैं और प्रकृति में ही विलीन हो जाते हैं और यदि साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो जिस प्रकार मनुष्य प्रकृति के बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता उसी प्रकार बिना प्राकृतिक सौन्दर्य के काव्य का निर्माण सम्भव नहीं है। साहित्य में प्रकृति का एक विशेष स्थान है। प्राकृतिक सौन्दर्य ही काव्य को सजीव व रोचक बनाती है। साहित्य,दर्शन, कला इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्रकृति के सौन्दर्य का स्थान सबसे विशिष्ट व सबसे आगे रहा है।

मुख्य शब्द: *वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, प्राकृतिक सौन्दर्य*

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत के आदिकवि के रूप में सर्वप्रसिद्ध हैं। उनके द्वारा रचित रामायण महाकाव्य भी आर्षकाव्य के रूप में विश्वविख्यात है। इसमें सात काण्ड व चौबीस हजार श्लोक हैं। जिसके कारण इसे चतुर्विन्शति साहस्त्री संहिता भी कहा जाता है क्योंकि रामायण के समस्त काण्ड अपने आप में व्यापक व महत्वपूर्ण हैं परन्तु इनमें से सबसे महत्वपूर्ण काण्ड सुन्दरकाण्ड को ही माना गया है। यद्यपि इसमें सामाजिक,राजनीतिक,दार्शनिक सभी पक्ष तो मिलते हैं, परन्तु प्राकृतिक सौन्दर्य का भी व्यापक वर्णन मिलता है। उनके प्राकृतिक सौन्दर्य में मौलिकता,रोचकता, नवीनता,सरसता,सहभागिता,कमनीयता व भावुकता के महान दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रकृति के चिरन्तन एवं नूतन सौन्दर्य का सूक्ष्म निरूपण किया है।

मनुष्य का प्रकृति के साथ बहुत ही मार्मिक व अपनत्व का सम्बन्ध रहा है परन्तु आज के आधुनिक युग में मनुष्य अपने भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये प्रकृति के सौन्दर्य को भूलते जा रहे हैं। अपने स्वार्थ की सिद्धि में इतने अन्धे हो चुके हैं कि प्रकृति का विनाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। जबकि देखा जाए तो हमारे सांसारिक जीवन- यापन के लिए जो भी बहुमूल्य वस्तुएं हैं वह हमें प्रकृति निःशुल्क रूप में प्रदान कर देती है। प्रकृति के सौन्दर्य में ही हमें परमात्मा के साक्षात् दर्शन होते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य ही हमें परमानन्द की प्राप्ति कराता है। हम प्रकृति में ही उत्पन्न होते हैं और प्रकृति में ही विलीन हो जाते हैं और यदि साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो जिस प्रकार मनुष्य प्रकृति के बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता उसी प्रकार बिना प्राकृतिक सौन्दर्य के काव्य का निर्माण सम्भव नहीं है। साहित्य में प्रकृति का एक विशेष स्थान है। प्राकृतिक सौन्दर्य ही काव्य को सजीव व रोचक बनाती है। साहित्य,दर्शन, कला इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्रकृति के सौन्दर्य का स्थान सबसे विशिष्ट व सबसे आगे रहा है।

प्राकृतिक सौन्दर्य अपने आप में एक ऐसी कला है जिसे सिर्फ देखकर ही सुन्दर नहीं कह सकते अपितु उसके पहचान के लिए मनुष्य को एक ऐसी सोच विकसित करनी पड़ती है जो प्रकृति की रमणीयता के बारे में वास्तविक अनुभूति कराये। प्राकृतिक सौन्दर्य एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को प्रकृति में समा जाने की चेष्टा उत्पन्न करती है। प्रकृति अपने सौन्दर्य प्रदर्शन के लिए किसी भी बाहरी साधनों की अपेक्षा नहीं करती है अपितु वह स्वतः ही अपनी अवस्था में सौन्दर्य पूर्ण होती है। जैसा कि महाकवि कालिदास ने भी कहा है -

'अहो! सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम्।'१

अर्थात् सुंदर आकृति वाले वस्तुओं में चाहे वह किसी भी अवस्था में हो उनमें परस्पर सुन्दरता निहित रहती है उसे किसी अन्य सौन्दर्यपरक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

महर्षि वाल्मीकि ने सुन्दरकाण्ड में प्रकृति के सौन्दर्य का यथास्थान वर्णन किया है। उन्होंने प्रकृति को आलम्बन व उद्दीपन दोनों रूपों में प्रस्तुत किया है। वह अशोकवाटिका की दृष्टि में प्रकृति के सौन्दर्य व रमणीयता का वर्णन करते हुए कहते हैं-

अशोकवनिका चेयं दृढं रम्या दुरात्मनः।

चन्दनैश्चम्पकैश्चापि बकुलैश्च विभूषिता।।२

इस श्लोक से यह ज्ञात होता है कि रावण की अशोक वाटिका अत्यन्त ही रमणीय है। वह चन्दन,चम्पा और सौलसिरि के वृक्षों से अत्यधिक सुशोभित है। यह वृक्ष न केवल इस वाटिका का सौन्दर्य प्रदर्शन कर रहे हैं अपितु माता सीता को भी मानसिक शान्ति प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार सुन्दरकाण्ड की यह अशोक वाटिका न केवल एक सर्ग में अपने सौन्दर्य को बिखेरती है अपितु समस्त सर्गों में इसकी सुन्दर छटा का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

महर्षि वाल्मीकि एक संवेदनशील कवि हैं उन्होंने स्वयं को कभी भी प्रकृति के सौन्दर्य से अलग नहीं किया है इसलिए रामायण जैसे ऐतिहासिक महाकाव्य को लिखने की प्रेरणा भी उनको एक प्राकृतिक सौन्दर्य से ही मिली है। जब वह तमसा नदी के तट पर संध्यावंदन के लिए जाते हैं इस तट पर एक निष्ठुर निषाद के द्वारा क्रौंच जोड़े में नर क्रौंच को मार दिए जाने पर क्रौन्ची की करुणा महर्षि के हृदय को अत्यन्त द्रवित कर देती है और वही करुणा एक छन्द के रूप में परिणत होकर इस महाकाव्य का जन्म ले लेती है। इस प्रकार का सकते हैं कि इस महाकाव्य का जन्म भी प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति करुणभाव के कारण ही हुआ है-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।

यत् क्रौन्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।३

महर्षि वाल्मीकि ने प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए समुद्र द्वारा मैनाक पर्वत का बड़ा ही मानवीय दृष्टि से वर्णन किया हैं-

तिर्यगूर्ध्वमधश्चैव शक्तिस्ते शैलवर्धितुम्।

तस्मात् संचोदयामि त्वामुतिष्ठ गिरिसत्तम।।४

अर्थात् हे मैनाक तुम सीधे-तिरछे ऊपर- नीचे जैसे चाहो वैसे बढ़ सकते हो क्योंकि बलवान हनुमान तुम्हारे ऊपर पहुंचने वाले हैं।

इस काण्ड में प्रकृति के सौन्दर्य का बड़ा ही मनोरम, मनोहरी वह वैज्ञानिक दृष्टि से वर्णन हुआ है। सौ योजन चौड़ी विशाल समुद्र को पार कर जब वीर हनुमान आकाश में उड़ते हुए लंका पहुंचते हैं और देखते हैं कि वहां का दृश्य बड़ा ही सुहावना होता है। चारों तरफ सुन्दर वृक्ष लगे हैं, विभिन्न प्रकार के पक्षी चहक रहे हैं, शीतल शनैः शनैः वायु बह रही है और लंका में पुष्पक विमान को देखते हुए कहते हैं कि-

मनः समाधाय तु शीघ्रगामिनं दुरावरं मारुततुल्य गामिनम्।

महात्मनां पुण्यकृतां महर्ध्दिनां यशस्विनामग्रयमुदामिवालयम्।।५

अर्थात् इसके सौन्दर्य को मापा नहीं जा सकता है। इसमें सौन्दर्य के सभी चिन्ह सुशोभित हो रहे हैं। वह आकाश में चलने में समर्थ है तथा वह अपने स्वामी की इच्छानुसार किसी भी उचित स्थान पर सोचने मात्र से पहुंच जाता है। जिसकी चाल वायु से भी अधिक वेगवान है उसे कोई रोक नहीं सकता है।

इस सुन्दरकाण्ड में प्रकृति के सौन्दर्य का बहुत ही रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। रावण के अन्तःपुर में पहुंचकर हनुमान जी रात्रि में लंका के घरों में माता सीता की खोज करते हुए इस प्रकार विचार कर रहे हैं की रात्रि में भी यह लंका नगरी ऐसे प्रतीत हो रही है मानो जैसे दिन का समय हो और यह राक्षसराज रावण भी सुन्दर आभूषणों से विभूषित ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश में संध्याकालीन लालिमा तथा विद्युतलेख से युक्त अङ्गकान्ति मेघ के समान सुशोभित हो रही है-

वृतमाभरणैर्दिव्यैः सुरुपं कामरुपिणम्।

सवृक्षवनगुल्माढ्यं प्रसुप्तमिव मन्दरम्।।६

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस काण्ड में प्रकृति के सौन्दर्य का जो भी वर्णन हुआ है वह बड़ा ही अद्भुत, रोचक व मनोरम है। इसमें विभिन्न प्रकार की वृक्षों,लताओं जैसे देवदारू,खजूर,पुष्पित, चिरौंजी इत्यादि वृक्षों का वर्णन हुआ है जिसे उन्होंने मानवीय जीवन के लिए उपयोगी बताया है इतना ही नहीं इस काण्ड का प्राकृतिक सौन्दर्य अपने परवर्ती काव्य का भी उपजीव स्रोत बन चुका है जैसे महाकवि कालिदास कृत मेघदूत के पूर्वमेघ में मेघ को दूत बनाकर भेजने की सुन्दर प्रेरणा सुन्दरकाण्ड में वर्णित हनुमान को दूत बनाकर लंका भेजे जाने के आख्यान से प्रेरित है जो प्रकृति के सौन्दर्य से अलग मनुष्य के स्वरूप का बोध कराता है। वहीं दूसरी ओर उत्तरमेघ के अलकापुरी के सौन्दर्य वर्णन में कवि ने एक ही चांद में छह ऋतुओं के जो छह चित्र उपस्थित किए हैं जिसकी सौन्दर्य छटा का वर्णन देखते ही बनता है-

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविध्दं नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।

चूडापाशे नवकुरबकं चारु कर्णेशिरीषं सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।७

इस प्रकार सुन्दरकाण्ड का यह प्राकृतिक सौन्दर्य न केवल काव्य एवं कवि की दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु सम्पूर्ण मानव जगत के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

१. अभिज्ञान शाकुन्तलम्,६ अं /६२वा०

२.वाल्मीकि रामायण, सु०का०-१४/४३

३.वाल्मीकि रामायण, बा०का०-२/१५

४.वाल्मीकि रामायण, सु०का०-१/९४

५.वाल्मीकि रामायण, सु०का०-८/५

६.वाल्मीकि रामायण, सु०का०-१०/९

७.मेघदूतम्, उत्तर मेघ, श्लोक सं०-२